

"बहुत चुपकी और थोड़ी आवाज हमारा पता है। कई पीढ़ियों से अनलिखे इतिहास में निवास है।" जाने किस भूमि से उठाई होगी प्रेमशंकर शुक्ल ने यह कविता, लेकिन हिन्दी के विराट सृजन-परिसर में लगभग अभी-अभी दाखिल हुए इस युवा कवि की फ़िरत पर ये पाँक्तियाँ कुछ दिन पहले तक ठीक ही चमकाती थीं। इधर प्रेमशंकर की चुपकी कविता बनकर काफ़ूर हुई और उनकी आवाज ने उनके परिचय का धेरा बाड़ा किया है। अब वे अनलिखे इतिहास की संज्ञा न होकर पहचान और प्रतिष्ठा के कक्ष में प्रवेश कर चुके हैं। भोपाल में बसे बुदालखट के इस सकोची और सादसी पसंद युवा कवि को इस साल के 'रजा पुरस्कार' से सम्मानित किया जा रहा है। राजधानी के जवाहर चौक से सटी बन्नी में उनके छोटे से घर-आँगन में यथायक खुशियों के पनाश मिल उठे हैं और कविता का वसंत एक बार फिर कोरे-कागज़ों पर बिखर गया है। खुद प्रेमशंकर हामी भरते हैं- 'कविता के आकाश में उड़ान भरते मेरे नए पंखों में सचपुच उत्साह की लहर दौड़ गई है।' इससे भी बढ़कर इस कवि को यह बात राहत देती है कि कई घड़ों में बंदी साहित्य-विगदारी के दर कीमे से उनके चयन पर समर्थन की आवाज आ रही है। निश्चय ही यह एक जेनरुइन और प्रतिभाशाली युवा कवि का सम्मान है। कदने वाले यह जोड़ना भी नहीं चूकते कि पहली बार रजा सम्मान की निर्णायक

## सृजन

### के आसपास

पहरेदारी करता। आलोचना के विर-परिचित अंदाज में बहते तो उनकी कविताओं में एक संघर्षशील आम आदमी की बगानी शुमार है। खुद प्रेमशंकर से पूछें तो वे इन कविताओं को आम आदमी की विविध आवाजों का कोलाज कहते हैं। यह सच भी लगता है।

## कविता के 'कुछ आकाश' में उड़ान भरते नए पंख



संभावनाशील लेखकों को उनकी पहली कृति के लिए दिए जाने वाले आर्थिक अनुदान के तहत उक्त शीर्षक गाड़लियाँ का चयन किया और दिल्ली के मध्ना बुक्स प्रकाशन ने इसे छापा। छोटी-बड़ी बयासी कविताओं के साथ प्रेमशंकर का सर्जक इस पुस्तक में प्रकट हुआ है। इन तमाम कविताओं के जरिए एक ऐसा माबुक और मधर्षशील मनुष्य सामने आता है जिसके भीतर अपरिभाष्य दुनिया को अपने राग से सरीला बनाते हुए सरगम का निजी सत्य गढ़ने की इच्छा है। अपने लोक के प्रति वफादार और मलिनता से विरक्त अपनी अस्मिता की माहिस के साथ

विनम्रता से कहते हैं 'मेरे आम आदमी के जीवन को नारे की तरह कविता में नहीं बना चाहता। मैं कविता में उसे और भी बड़ी जगह देना चाहता हूँ।' बकौल प्रेमशंकर वे निश्चित तौर पर किसी कवि-लेखक के प्रभाव से परे अपनी परंपरा और समकालीनता में ही कविता को घुला मिला गते हैं। किसी प्रकार की गुटबंदी से वे फिलवत शामिल नहीं है। अपितु अपनी रचनात्मक निष्ठा में ही पूरा भरोसा रखते हैं। कविता उनके लिए मौक नहीं, जरूरत है। लगभग दो दशक पहले रीबा के एक गाँव से नौकरी की तलाश

में भोपाल आए प्रेमशंकर बहुकलाकेंद्र भारत भवन के प्रकाशन विभाग के हैं। वे स्वीकारते हैं कि घर-परिवार के संस्कारों से ग्रंथो-कित्तावों की सोहवत मिली और भोपाल के साहित्यिक-सांस्कृतिक परिवेश ने मुझे परोक्ष रूप से सीबने-समझने का अवकाश दिया। मधर्ष को वे अपने जीवन की नियति का हिस्सा मानते हैं लेकिन जिंदगी का असल म्याद वे कहते हैं 'मृगाल' में ही मिला। यही वजह है कि प्रेमशंकर की कविताओं में परिवार और प्रकृति है, स्मृतियाँ और भरोसा है, गाँव और शहर है, रिश्तों की खुश्व है। इस विविध को साधते हुए वे राजा और तेजस्वी लगते हैं। भाषायी जटिलता और शिल्प के आरौपित सौंदर्य से उन्हें परहेज है। वे अपनी कविता में देशकाल से जुड़ी भाषा अपनाते हैं। प्रेमशंकर का ही कहना है 'भाषा मेरे लिए मिट्टी की तरह है, उससे कविता की मूर्त गढ़ता हूँ।' मध्ध्य विश्वकार सैयद हैदर रजा से जाने कितनी बार सासनां दुआ होगा इस युवक का, पर यह नाम प्रेमशंकर के लिए एक दिन गहना बन जाएगा, सोचा भी नहीं था। म.प्र. कला परिषद की वीथिका में सूची-केनवास के महारथी और कविता के नए सारथी का योग वाकई एक वासंती घटना होगी।